जनसत्ता, 27-3-16, पृ॰ 4

मौसम न हो बेईमान, दुआ मांग रहे किसान

बेमौसम बरसात और आंधी कर सकती है फसलों को बर्बाद

जनसत्ता
1-4
27-3-16

अनूप चौधरी

फरीदाबाद, 26 मार्च। मार्च के महीने में रोजाना बदलते मौसम के मिजाज ने किसानों की चिंता बढ़ा दी है। कटाई के लिए तैयार खड़ी गेहूं, सरसों और दलहन की फसलों को देखते हुए किसान बरसात और ओलावृष्टि न होने की दुआ मांग रहे हैं। फरवरी और मार्च में कई जगह तेज आंधी के साथ हुई बरसात और ओलावृष्टि ने फसलों को पहले ही बीस से तीस फीसद तक नुकसान पहुंचा दिया है। खेतों में खड़ी पकी हुई फसलें अब बेमौसम बरसात नहीं झेल पाएंगी।

बीते कई साल, खासतौर से पिछले साल से किसान मौसम की मार के चलते कंगाली की हालत में पहुंच गए हैं। पिछले साल सरकार ने मुआवजा तो दिया, लेकिन इससे किसानों की मेहनत की असल भरपाई नहीं हो पाई। किसानों को ब्याह-शादी और बच्चों की शिक्षा के लिए साहूकारों से कर्ज लेना पड़ा, जिसकी अदायगी मौजूदा फसल की बिक्री के बाद ही हो सकती है। हालात फिर बिगड़ने लगे हैं और मौसम के बदलते रुख ने किसानों को मुश्किल में डाल दिया है। फिलहाल पलवल, होडल, हथीन, बल्लभगढ़, मोहना और तिगांव के इलाके में हजारों एकड़ गेहूं और सरसों की पकी हुई फसल खेतों में खड़ी है। बीते दिनों हुई बरसात में बीस से तीस फीसदी फसल बर्बाद होने से किसान पहले से ही सदमे में है। मौसम ने फिर फसलों पर कहर ढाया तो किसानों पर दोहरी मार पड़ेगी। फसल बर्बाद होने से अकेले किसान ही प्रभावित नहीं होते, हजारों मजदूरों के सामने भी रोजी-रोटी का सवाल खड़ा हो जाता है। मोहना गांव के किसान रामकिशन का कहना है कि बदलते मौसम के चलते उनके जैसे कई किसान चिंतित हैं। बीते साल भी किसानों को मौसम की मार से भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ा था। मुआवजे से तो खेत में की गई मजदूरी की भरपाई भी नहीं होती। किसानों को अभी बीते साल लिया कर्ज उतारने में ही मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। मुआवजा समय पर न मिलने से किसान हमेशा आर्थिक संकट में फंस जाते हैं।

हालांकि सरकार ने किसानों को सहकारी बैंकों व संस्थाओं से कम ब्याज दर पर कर्ज लेने की सुविधा दी है, लेकिन इसकी औपचारिकता पूरी करने की प्रक्रिया बहुत लंबी है। इससे बचने और अपनी फौरी जरूरतों को पूरा करने के लिए किसान साहूकार या आढ़ती से कर्ज लेने पर मजबूर हो जाते हैं। सरकार फसल के नुकसान का आकलन और भरपाई की प्रक्रिया को आसान बनाए, तभी किसानों को कुछ राहत मिल सकती है। बार-बार बदलते मौसम के चलते गेहूं और सरसों की फसल के उत्पादन में पहले ही 25 से 40 फीसद की गिरावट होने की संभावनाएं कृषि वैज्ञानिक जता चुके हैं। फरीदाबाद के कृषि विभाग के उपनिदेशक का कहना है कि गेहूं और सरसों की फसल को पकने के लिए पहले ज्यादा ठंड और उसके बाद हल्की सर्दी की दरकार होती है। एकदम गर्म मौसम होने से फसलों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इस मौसम में तो जनवरी, फरवरी और मार्च में मौसम का तापमान लगातार बढ़ता-गिरता रहा है और साथ ही इन्हीं महीनों में बेमौसम बरसात भी हुई जिसके चलते फसलों के प्राकृतिक रूप से पकने पर असर पड़ा। किसानों को डर है कि मौसम की आंख-मिचोली कहीं इस बार भी उन्हें दुर्दिन देखने पर न मजबूर कर दे।

दीपक 28/3/16
प्रभारी, समाचारपत्र यूनिट